6/5/96

HL-8/8

हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

22 सितम्बर, 1995

खण्ड 2, अंक 1

अधिकृत विवरण

शुक्रवार, 22 सितम्बर, 1995

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
शोक प्रस्ताव	(1) 1
बैठक का स्थगन	(1) 16

मूल्य : 33 00

ERRATA

TO

Haryana Vidhan Sabha Debates Vol. 2, No. 1, dated the 22nd September, 1995.

Read	For	Page	Line
नारायण	भारायण	4	1
चैम्पियनशिप	चम्पियनशिप	7	29
बहुत	बहुते	9	17
इंस्टीच्यूशन	इंस्ट्रीच्यूशन	13	19, 24
लोगों ने	लोगों	17	1

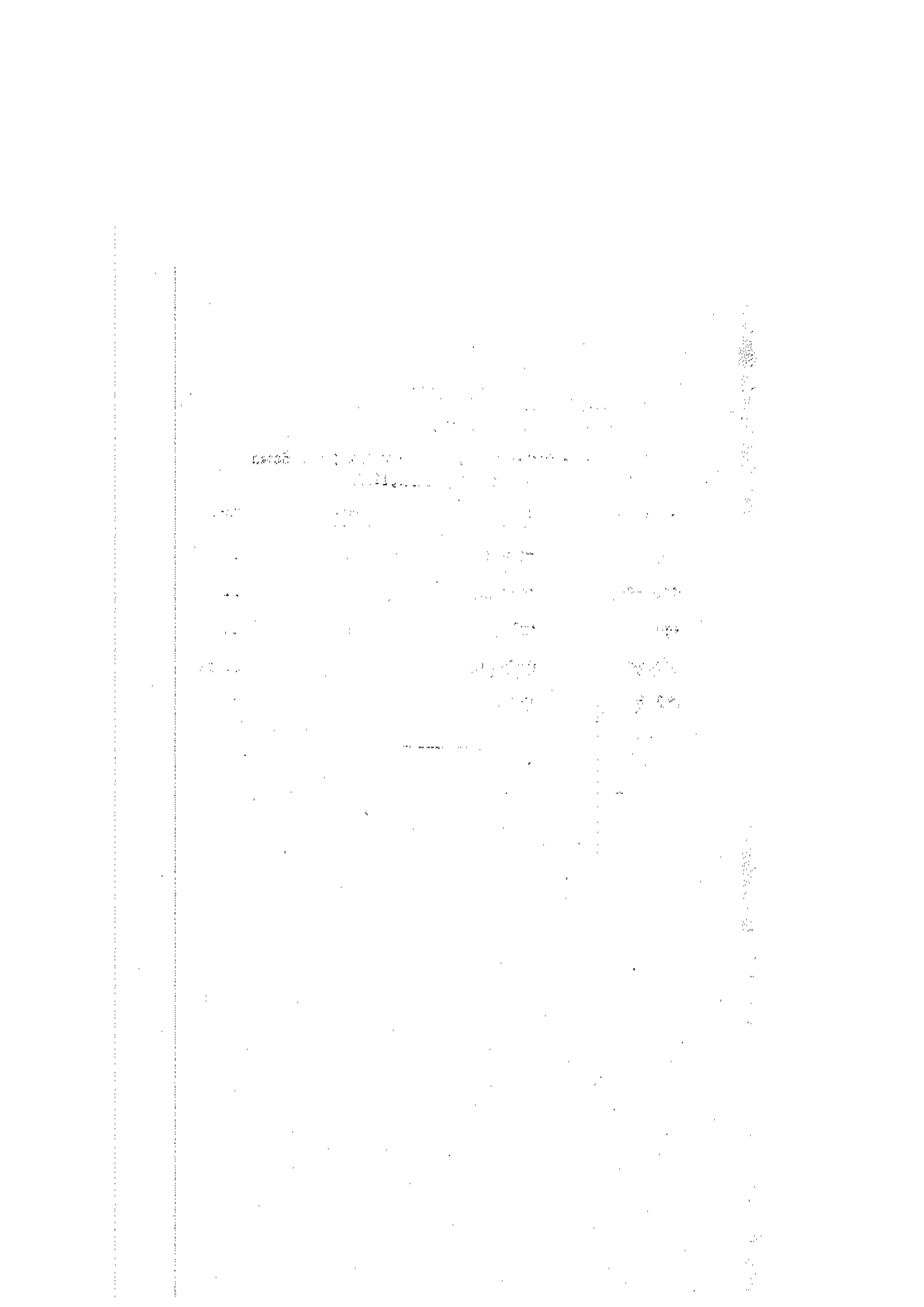

हरियाणा विधान सभा

शुक्रवार, 22 सितम्बर, 1995

हरियाणा विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभा हाल, विधान भवन, सैक्टर 1, चण्डीगढ़ में 14.00 बजे हुई । अध्यक्ष (चौधरी ईश्वर सिंह) ने अध्यक्षता की ।

शोक प्रस्ताव

श्री अध्यक्ष : आनरेबल मैम्बर्ज, अब ऑबिचुअरी रैफ्रेंसिज होंगे ।

मुख्य मन्त्री (चौधरी भजन लाल) : अध्यक्ष महोदय, पिछले सैशन और इस सैशन के अर्से के बीच कुछ महानुभाव स्वर्ग सिधार गए हैं । मैं उनके लिये ऑबिचुअरी रैजोल्यूशन पेश करता हूं ।

श्री बेअंत सिंह, पंजाब के मुख्य मन्त्री

अध्यक्ष महोदय, यह सदन पंजाब के मुख्य मंत्री श्री बेअंत सिंह की 31 अगस्त, 1995 को हुई निर्मम हत्या पर गहरा शोक प्रकट करता है ।

उनका जन्म 19 फरवरी, 1922 को हुआ । स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद वह 1943 में भारतीय सेना में भर्ती हुए । उन्होंने 1950 में अपना राजनैतिक जीवन आरम्भ किया । वह 1969,1972,1977,1980 तथा 1992 में पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए । वह 1980 में पंजाब में मंत्री पद पर रहे ।

उन्होंने 25 फरवरी, 1992 को पंजाब के मुख्य मंत्री का पदभार उस समय सम्भाला जब पंजाब में उग्रवाद की ज्वाला धधक रही थी, आम जनता आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे भोले-भाले व निर्दोष नागरिकों के कत्लेआम की विभीषिका से त्रस्त थी, बरसों से पंजाब में लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना नहीं हो पा रही थी और पंजाब के विकास की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गई थी । ऐसे समय में उन्होंने बहुत मजबूती से लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना की और दृढ़ निश्चय, दिलेरी और बहादुरी से आतंकवाद का मुकाबला किया । यह उनकी देशभक्ति और साहस का ही परिणाम था कि पंजाब में फिर से शांतिपूर्ण वातावरण तथा साम्प्रदायिक सौहार्द की स्थापना हो सकी और वहां तेज चहुंमुखी विकास की प्रक्रिया पुन: प्रारम्भ हो सकी ।

[चौधरी भजन लाल]

उनके निधन से देश एक कुशल राजनीतिज्ञ, अनुभवी विधायक, योग्य प्रशासक, देशभक्त और शान्तिदूत की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत नेता के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री मोरार जी देसाई, भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री

अध्यक्ष महोदय, यह सदन भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई के 10 अप्रैल, 1995 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 29 फरवरी, 1896 को हुआ। उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया तथा कई बार जेल गए। वह 1937,1946 तथा 1952 में बम्बई विधान सभा के सदस्य चुने गए। वह 1952 से 1956 तक बम्बई के मुख्य मंत्री तथा 1956 से 1963 तक केन्द्रीय मंत्री रहे। उन्होंने 1963 में कामराज योजना के अन्तर्गत त्यागपत्र दे दिया। वह 1967 से 1969 तक भारत के उप प्रधान मंत्री पद पर रहे। वह 1977 में भारत के प्रधान मन्त्री बने तथा 1979 तक इस पद पर रहे। उन्होंने अनेक देशों की यात्राएं कीं। वह अपनी ईमानदारी, योग्यता तथा प्रशासनिक दक्षता के लिये प्रसिद्ध थे। राष्ट्र के प्रति उनकी सराहनीय सेवाओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक अलंकरण "भारत रत्न" से विभूषित किया गया।

उनके निधन से देश एक महान् स्वतन्त्रता सेनानी, विख्यात राजनीतिज्ञ, योग्य तथा दूरदर्शी प्रशासक तथा सुलझे हुए सांसद की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत नेता के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री चमन लाल, हरियाणा विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य

अध्यक्ष महोदय, यह सदन हरियाणा विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री चमन लाल की 11 जून, 1995 को मेरठ में हुई हत्या पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 13 मई, 1926 को हुआ। उन्होंने 1945 में भारतीय सेना में सेवा की। उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी भाग लिया और कई बार जेल गये। वह 1967 में हरियाणा विधान सभा के सदस्य चुने गए।

उनके निधन से राज्य एक स्वतन्त्रता सेनानी तथा योग्य विधायक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री मुन्नी लाल, हरियाणा विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य

अध्यक्ष महोदय, यह सदन हरियाणा विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री मुन्नी लाल के 19 अप्रैल, 1995 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 1941 में हुआ। वह व्यवसाय से कृषक थे। वह 1987 में हरियाणा विधान सभा के सदस्य चुने गए। उनकी समाज सेवा में गहरी रुचि थी।

उनके निधन से राज्य एक योग्य विधायक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री सुन्दर सिंह, संयुक्त पंजाब के भूतपूर्व मंत्री

अध्यक्ष महोदय, यह सदन संयुक्त पंजाब के भूतपूर्व मंत्री श्री सुन्दर सिंह के 6 अगस्त, 1995 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 7 जुलाई, 1906 को हुआ। वह 1946 में पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए। वह 1952 से 1956 तथा 1964 से 1966 तक संयुक्त पंजाब में मंत्री रहे। वह 1980 तथा 1984 में लोक सभा के सदस्य चुने गए। उन्होंने समाज सेवा के अनेक कार्य किए।

उनके निधन से देश एक सामाजिक कार्यकर्ता तथा अनुभवी विधायक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत नेता के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री नरंजन दास धीमान, संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य

अध्यक्ष महोदय, यह सदन संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री नरंजन दास धीमान के 27 जुलाई, 1995 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

वह संयुक्त पंजाब विधान सभा के 1952 से 1957 तक सदस्य रहे। वह धीमान सभा, फिल्लौर के प्रेजीडैंट रहे।

उनके निधन से देश एक विधायक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री घासी राम, संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य

अध्यक्ष महोदय, यह सदन संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य श्री घासी राम के 6 अगस्त, 1995 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 7 अक्तूबर, 1923 को हुआ। वह 1954 में जुलाना निर्वाचन क्षेत्र से पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए। उन्होंने दलितों के उत्थान में गहरी रुचि ली और वह सामाजिक व शैक्षिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

उनके निधन से देश एक कुशल विधायक और सामाजिक कार्यकर्ता की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

[चौधरी भजन लाल]

श्री प्रेम नारायण भाटिया, ट्रिब्यून समाचार-पत्र समूह के पूर्व प्रधान सम्पादक

अध्यक्ष महोदय, यह सदन ट्रिब्यून समाचार-पत्र समूह के पूर्व प्रधान सम्पादक श्री प्रेम नारायण भाटिया के 8 मई, 1995 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 11 अगस्त, 1911 को हुआ। उन्होंने अपने पत्रकारिता जीवन का आरम्भ वर्ष 1934 में लाहौर से प्रकाशित सिविल एंड मिलिट्री गजट में उप-सम्पादक के रूप में आरम्भ किया। उसके बाद वह सेना में भर्ती हुए तथा जन सम्पर्क निदेशालय में अधिकारी के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1959 में ट्रिब्यून के सम्पादक, 1960 से 1963 तक टाइम्स आफ इंडिया के रैजीडेंट सम्पादक तथा 1963 से 1965 तक इंडियन एक्सप्रेस में सम्पादक के रूप में कार्य किया। वह 1965 से 1969 तक केन्या में तथा 1969 से 1973 तक सिंगापुर में उच्चायुक्त रहे। वह राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ थे। उन्हें 1979 में मुंशी प्रेमचन्द शताब्दी अवार्ड व 1982 में क्रिटिक सर्कल आफ इंडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिये उन्हें 1984 में बी0डी0 गोयनका अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

उनके निधन से देश एक उच्चकोटि के पत्रकार तथा राजनयिक की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

श्री हरीश चन्द्र खन्ना, दूरदर्शन के भूतपूर्व महा निदेशक

अध्यक्ष महोदय, यह सदन दूरदर्शन के भूतपूर्व महा निदेशक श्री हरीश चन्द्र खन्ना के 24 जुलाई, 1995 को हुए दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

उनका जन्म 10 सितम्बर, 1925 को हुआ। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा में आने से पूर्व आकाशवाणी तथा बी0बी0सी0 में कार्य किया। वह हरियाणा सरकार तथा भारत सरकार में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहे। उन्होंने संचार के क्षेत्र में सराहनीय भूमिका निभाई। उन्होंने मारीशस में सूचना एवं प्रसारण में जन संचार सलाहकार के रूप में कार्य किया तथा मारीशस के प्रधान मंत्री के सूचना सलाहकार भी रहे। वह 1984 से 1986 तक दूरदर्शन के महा निदेशक पद पर रहे। इस समय वह हरियाणा की मीडिया सलाहकार समिति के अध्यक्ष पद पर थे। उन्होंने कई देशों की सद्भावना यात्राएं कीं।

उनके निधन से देश एक योग्य प्रशासक, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक, जिसने जन संचार के क्षेत्र में सराहनीय भूमिका निभाई, की सेवाओं से वंचित हो गया है। यह सदन दिवंगत के शोक-संतप्त परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन 31 अगस्त, 1995 को हुए शक्तिशाली बम विस्फोट में पंजाब के मुख्य मंत्री श्री बेअंत सिंह के साथ मारे गए व्यक्तियों जिनमें, कुछ हरियाणा के कर्मचारी थे, के दुःखद एवं असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है। यह सदन पंजाब के विधायक श्री बलदेव सिंह के 11 सितबर, 1995 को हुए निधन पर भी संवेदना प्रकट करता है।

यह सदन दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन हाल ही में आए तूफान व मूसलाधार वर्षा से राज्य के अधिकांश भागों में आई बाढ़ में मारे गए लोगों के दुःखद व असामयिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

यह सदन दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, यह सदन 20 अगस्त, 1995 को जिला उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में हुई भयंकर रेल दुर्घटना में मारे गए हरियाणा के सात खिलाड़ियों सहित दूसरे यात्रियों के दुःखद निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

यह सदन दिवंगतों के शोक-संतप्त परिवारों के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

प्रो0 सम्पत सिंह (भट्टू कलां) : स्पीकर साहब, अभी सदन के नेता जी ने जो शोक प्रस्ताव रखे हैं, मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से उनका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं। स्पीकर साहब, सबसे पहले पंजाब के मुख्य मंत्री सरदार बेअंत सिंह जी का नाम आया है। अभी पंजाब में शांति और सुरक्षा की भावना आ ही रही थी कि ऐसे माहौल में ऐसे महान व्यक्ति का इन हालात में कत्ल हो जाना वाकई में बहुत दुखदायी बात है। इस बात का अकेले पंजाब प्रदेश के लोगों को ही नहीं बल्कि सारे देश के लोगों को सदमा पहुंचा है। जहां पर वह बम विस्फोट हुआ वहां पर पंजाब प्रदेश और हरियाणा प्रदेश दोनों प्रदेशों के कार्यालय हैं। हरियाणा प्रदेश के मुख्य मंत्री का दफ्तर भी वहीं पर है और पंजाब के मुख्य मंत्री का भी दफ्तर वहीं पर है। पंजाब के मुख्य मंत्री "जैड" कैटेगरी में थे, इन हालात में उनका कत्ल होना एक बहुत ही दुर्भाग्य-पूर्ण बात है। इस बात से हर आदमी चिन्तित हुआ है। जो आदमी अपनी ड्यूटी पूरी करके जा रहा हो तो क्या वह यह सोच सकता है कि इस तरह की बात हो जाएगी। सरदार बेअंत सिंह जी पंजाब असैम्बली के मैम्बर, मिनिस्टर रहे और अब मुख्य मंत्री थे। पंजाब कांग्रेस पार्टी जब निरस्त होती जा रही थी, उस समय उन्होंने इसकी बागडोर सम्भाली थी। स्पीकर साहब, इस तरह के शांति के दूत हमारे बीच में से चले जाएं तो वाकई में यह एक बहुत दुखदायी बात है। स्पीकर साहब, हमारे और उनके आपस

[प्रो0 सम्पत सिंह]

में चाहे सौ मतभेद रहें, चाहे स्टेट के इशूज पर मतभेद रहें लेकिन यह बात माननी पड़ेगी कि उन्होंने पंजाब में शांति एवं व्यवस्था की स्थिति कायम की ।

इसके बाद श्री मोरारजी देसाई का नाम है । श्री मोरार जी देसाई ने देश की आजादी के लिये स्वतन्त्रता आन्दोलन की लड़ाई लड़ी । आज उन्हीं जैसे लोगों की बदौलत देश आजाद है । उन्हीं के कारण चुने हुए प्रतिनिधियों की सरकारें बनती हैं । देश को आजाद कराने में, देश के निर्माण में और डैमोक्रेटिक नार्म्ज स्थापित कराने में उनका बहुत बड़ा हाथ रहा । स्पीकर साहब, वे महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री भी रहे देश की पार्लियामैंट में विभिन्न मंत्रालयों के मंत्री रहे और देश के प्रधान मंत्री भी रहे । उन्होंने देश में एक बहुत अच्छी परम्परा रखी थी और उन्होंने जो सबसे पहला काम किया, वह शराब बंदी का किया । उन्होंने प्रोहिबिशन का नारा दिया था, जिसके कारण देश में कई जगहों पर शराबबंदी हुई भी, लेकिन हरियाणा प्रदेश में शराबबंदी नहीं हुई । उनकी नीति के अनुसार टोटल हरियाणा में शराब बंदी होनी चाहिये यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है ।

अध्यक्ष महोदय, श्री चमन लाल जी के निधन का भी हमें दुःख है । वे हरियाणा में एम0एल0ए0 रहे हैं । उन्होंने हरियाणा में समाज के उत्थान के लिये बड़े काम किए । उनके परिवार के प्रति भी हम अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं । अध्यक्ष महोदय, श्री मुनी लाल जी भी हरियाणा विधान सभा के एम0एल0ए0 रहे हैं । उनका भी 19 अप्रैल, 1995 को निधन हो गया, उनके निधन का भी हमें दुःख है । श्री सुन्दर सिंह जी का भी निधन हो गया । वे ज्वायंट पंजाब में एम0एल0ए0 थे, साथ ही साथ वे मंत्री भी रहे हैं और लोक सभा के सदस्य भी रहे हैं । उनकी मृत्यु का भी हमें दुःख है । श्री नरंजन दास धीमान भी ज्वायंट पंजाब में एम0एल0ए0 रहे हैं । उनके परिवार के प्रति भी हम अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं । श्री बाँसी राम के निधन पर भी हमें बहुत दुःख हुआ है । वे भी, संयुक्त पंजाब में एम0एल0ए0 रहे हैं । उन्होंने दलितों के उत्थान में गहरी रुचि ली । अतः उनके परिवार के सदस्यों के प्रति भी, हम अपनी सहानुभूति प्रकट करते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, श्री प्रेम नारायण भाटिया के निधन का भी हमें बेहद दुःख है । श्री भाटिया का पत्रकारिता में बहुत ऊंचा स्थान रहा है । वे बड़े निर्भीक पत्रकार रहे हैं । उन्होंने विभिन्न समाचार पत्रों में सम्पादक के रूप में काम किया । साथ ही साथ उन्होंने दूसरे देशों में भारत के राजदूत के रूप में भी कार्य किया है । ऐसे महान आदमी के चले जाने का हमें बहुत दुःख हुआ है । अतः हम उनके परिवार के सदस्यों के प्रति भी, हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, श्री हरीशचन्द्र खन्ना हमारे एक सीनियर प्रशासनिक अधिकारी रहे हैं । उन्होंने दूरदर्शन के निदेशक के पद पर भी कार्य किया था । इसके अलावा

ने हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के चेयरमैन भी रहे हैं। ऐसे आफिसर का हमारे बीच से चले जाना, जिन्होंने राज्य, केन्द्र और दूसरे देशों में बहुत अच्छा काम किया हो, बेहद दुख है। अतः हम उनके परिवार के सदस्यों के प्रति भी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से पंजाब के विधायक श्री बलदेव सिंह व पंजाब के मुख्य मंत्री श्री बेअंत सिंह के साथ मारे गए व्यक्तियों, जिनमें हरियाणा के कुछ कर्मचारी भी थे, का दुःख है। अतः हम उन सभी परिवारों के प्रति भी हार्दिक संवेदना प्रकट करते हैं।

अंत में स्पीकर साहब, तूफान से और मूसलाधार बारिश में सैंकड़ों लोग मारे गए, उनका भी हमें बहुत दुःख है। जहां पर यह हादसा हुआ, वहां पर लोग अब भी अपने आपको असुरक्षा की भावना से देख रहे हैं और उनमें असुरक्षा की भावना बनी हुई है। जैसे पीछे लातूर में भूचाल आया था और जिस तरह से तहस-नहस वहां पर हुआ था और उसकी खबर सारे देशों में फैली थी, उससे भी बदतर हालत हमारे यहां पर इस बार बारिश के कारण हुई है। अभी तक तो सरकार आंकड़े इकट्ठे करने में लगी हुई है। कई गांवों में तो सरकार की तरफ से अब भी कोई मदद नहीं पहुंची है। बहुत सारी जगहों पर तो अब भी पशुओं की लाशें तैर रही हैं। न जाने इस बारिश में कितनी जानें गयी हैं? इसमें कोई दो राय नहीं कि कुदरत की जबरदस्त मार पड़ी है। इस प्रकार से मार पड़ी जैसे सरकार और कुदरत दोनों मिल गए और लोगों की देखभाल करने वाला कोई नहीं रहा।

अध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश में फिरोजाबाद के पास हुई रेल दुर्घटना में बहुत से लोग मारे गए। इस दुर्घटना में विशेषकर टाप कैटेगरी के लोग मारे गए। जिनमें मिल्ट्री के कुछ जवान भी थे और होनहार खिलाड़ी भी थे। जो होनहार खिलाड़ी मारे गए, वे जूनियर स्तर के यानि 16 से 19 साल के बीच के थे। उनमें हरियाणा के भी 7 खिलाड़ी मारे गए। ये खिलाड़ी बहुत गरीब परिवार से संबंधित थे। हम उनके परिवारों में संवेदना प्रकट करने भी गए थे। इन में से 3 बच्चे तो भिवानी जिले के थे, 2 बच्चे सच्चा खेड़ा जिला जीन्द तथा एक बच्चा रोहतक जिले का था। सातों खिलाड़ियों के कोचिज और प्रैस के लोग भी यह कह रहे हैं कि आयन्दा 10 साल के लिये हरियाणा का फ्यूचर खेलों के मामले में बन्द सा हो गया है। आगे औलम्पिक्स तथा एशियन चम्पियनशिप आने वाली है और इन बच्चों ने ही हरियाणा के साथ पूरे देश का नाम रोशन करना था। उनके परिवार के सदस्यों से सहानुभूति प्रकट करने हम उनके घर पर भी गए हैं। सरकार उनकी मदद कर रही है और सरकार को और मदद भी करनी चाहिये। इसके साथ ही मैं यह सुझाव भी दूंगा कि इन बच्चों के नाम पर कोई स्कालरशिप, कोई इन्स्टीच्यूट या कोई स्पोर्ट कालेज जरूर खोला जाना चाहिये क्योंकि एक प्रकार से ये बच्चे देश के लिये कुर्बान हुए हैं इसलिये उनके लिये ऐसा कुछ किया जाना चाहिये जिससे उनका नाम जुड़ा रहे।

[प्रो0 सम्पत सिंह]

स्वर्गीय सर, विद्यासागर जी जनसत्ता के साथ अनेक प्रमुख समाचार-पत्रों तथा पंजाब केसरी सामाचार पत्र के लिये काम करते रहे तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया है। वे एक निर्भीक, निडर तथा निष्पक्ष पत्रकार थे। उनके निधन से पत्रकारितया जगत को बहुत बड़ा नुक्सान हुआ है। हरियाणा के लोगों के प्रति उनकी बड़ी गहन रुचि थी क्योंकि हरियाणा के लोगों के साथ तथा हरियाणा की राजनीति के साथ उनको बहुत लगाव था। उनके प्रति भी मैं बड़ी गहरी संवेदना प्रकट करता हूं। मैं अपनी ओर से तथा अपनी पार्टी की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करता हूं।

चौधरी बंसी लाल (तोशाम) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो शोक प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं। सरदार बेअंत सिंह जी की जिस ढंग से हत्या हुई है, वह बड़ी दर्दनाक और दुखदायी बात है तथा इसने साथ ही साथ आगे के लिये, भविष्य के लिये हम सब को एक चेतावनी भी दी है। सरदार बेअंत सिंह ने पंजाब को आतंकवाद से बाहर निकाला था, कहीं ऐसा न हो कि वही हालात फिर से पैदा हो जाएं। यह बात बाद की है। उनके निधन पर हम दुःख तो प्रकट करते ही हैं, साथ ही साथ हम आगे के लिये चिन्ता भी प्रकट करते हैं। हमें अभी से आगे के लिये ज्यादा संजीदा होना चाहिये। सरदार बेअंत सिंह जी एक पुराने योद्धा थे। उन्होंने चाहे कोई भी लड़ाई लड़ी, चाहे वह स्वतन्त्रता की लड़ाई थी, चाहे वह राजनीति की लड़ाई थी, परन्तु पंजाब में से आतंकवाद को खत्म करने का उन्होंने बहुत बड़ा काम करके दिखाया। इस काम में उनसे पहले कोई कामयाब नहीं हुआ था लेकिन वे कामयाब हुए जिसके लिये वे बधाई के पात्र थे और इसके लिये उनको बधाई मिलती भी थी। लेकिन भगवान को जो मन्जूर था, वह हो गया जिसको कोई वापिस नहीं ला सकता। मैं सरदार बेअंत सिंह जी के परिवार के प्रति अपनी तथा अपनी पार्टी की ओर से सहानुभूति प्रकट करता हूं तथा भगवान से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत की आत्मा को शांति दे।

अध्यक्ष महोदय, एक बहुत बड़ी टावरिंग पर्सनैल्टी हिन्दुस्तान की धरती से उठ गई, वे हैं श्री मोरारजी देसाई। श्री मोरारजी देसाई एक पुराने स्वतन्त्रता सेनानी थे। उन्होंने देश की आजादी के लिये जेलें भी काटी थीं और देश के आजाद होने के बाद विभिन्न पदों पर रहते हुए देश की सेवा भी की। अध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ी बात यह थी कि वे देश के ऊंचे से ऊंचे इलैक्टिड पद पर बैठे, मगर उन्होंने किसी भी जगह अपने सिद्धान्तों को नहीं छोड़ा। मोरार जी देसाई इस बात के लिये प्रसिद्ध थे कि चाहे कुछ भी हो जाए, दुनिया इधर की उधर हो जाए लेकिन वे अपने पथ से कभी विचलित नहीं होते थे, अपना रास्ता नहीं छोड़ते थे। एक साल बाद वे 100 साल के होने वाले थे लेकिन भगवान को यहां भी कुछ और ही मन्जूर था और वे इस असार संसार से चले गए। उनके स्वर्गवास पर मैं मुख्य मंत्री जी के साथ इस बात पर सहमत हूं कि उनके परिवार को संवेदना सन्देश भेजा जाए। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा

को शांति दे। श्री जमन लाल जी हरियाणा विधान सभा के मैम्बर रहे और इस प्रकार संसार से चल बसे हैं। मैं उनके परिवार के प्रति भी सहानुभूति प्रकट करता हूं। इसी प्रकार श्री मुनी लाल जी भी हरियाणा विधान सभा के सदस्य रहे और मैं उनके स्वर्गवास पर भी सहानुभूति प्रकट करता हूं।

श्री सुन्दर सिंह जी संयुक्त पंजाब में मंत्री रहे। वे अपने आप में एक निराले इंसान थे। वे मंत्री तो रहे ही थे, लेकिन इसके साथ ही साथ पार्लियामैंट के मैम्बर भी रहे हैं। जब हम संयुक्त पंजाब में थे तो उन्होंने हरियाणा प्रदेश की बहुत सेवा की, मैं उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री नरंजन दास धीमान संयुक्त पंजाब में भूतपूर्व एम0एल0ए0 थे, मैं उनके परिवार के प्रति भी संवेदना प्रकट करता हूं। श्री घासी राम, 1954 में पैप्सू असैम्बली के मैम्बर रहे जो बाद में पंजाब में मर्ज हो गई थी। मैं उनके परिवार के प्रति भी संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री प्रेम नारायण भाटिया, ट्रिब्यून समाचार-पत्र समूह के पूर्व प्रधान सम्पादक थे, सिज़ैन्ड डिप्लोमैट थे, वे एक अच्छे व्यक्ति थे। सब में उनकी अपनी प्रतिष्ठा थी, मैं उनके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूं।

श्री हरीश चन्द्र खन्ना, दूरदर्शन के भूतपूर्व महा निदेशक थे। हरियाणा की मीडिया सलाहकार कमेटी के सीनियर और बहुत लायक अफसर थे। मुझे उनके साथ मिलने का मौका मारीशस में मिला। वे हरियाणा इलैक्ट्रीसिटी बोर्ड के चेयरमैन भी रहे। उनकी मृत्यु से हम एक लायक इन्सान से वंचित हो गए हैं। मैं उनके परिवार के प्रति सहानुभूति प्रकट करता हूं।

श्री बेअंत सिंह के साथ बम विस्फोट में जो-जो लोग मारे गए हैं, मैं उनके परिवारों के प्रति भी संवेदना प्रकट करता हूं।

इसके साथ ही जो लोग तूफान से मारे गए हैं मैं उनके परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं। कम से कम मैंने ऐसे हालात कभी नहीं देखे। रात को जो लोग सुखे में सोए थे, वे सवेरे बाढ़ की चपेट में आ गए। अध्यक्ष महोदय, पानी किसी की भी परवाह नहीं करता है, उसमें सब मारे जाते हैं। बाढ़ से जितने भी लोग मारे गए हैं, मैं उनके परिवारों के प्रति भी संवेदना प्रकट करता हूं।

फिरोजाबाद में रेल दुर्घटना में जो लोग मारे गए हैं, मैं उनके परिवारों के प्रति संवेदना प्रकट करता हूं। वह दुर्घटना इस दशक की सबसे बड़ी दुर्घटना थी और इसमें बहुत से बेगुनाह लोग मारे गए हैं। इसमें जो हरियाणा के खिलाड़ी मारे गए, उनमें तीन खिलाड़ी तो मेरे जिले के थे। हरियाणा के खिलाड़ी या दूसरे खिलाड़ी जो इस दुर्घटना में मारे गए हैं मैं एक बार फिर उनके परिवारों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता

[चौधरी बंसी लाल]

हूं। श्री विद्यासागर जी जनसत्ता अखबार के एक प्रमुख संवाददाता थे ये एक बड़े योग्य व्यक्ति थे। मैं समझता हूं कि उनके जाने से हमने एक बहुत ही योग्य पत्रकार और एक बड़ा ही योग्य इन्सान खो दिया है, जिसकी पूर्ति कभी भी हो नहीं सकती। अध्यक्ष महोदय, बाकी जो भगवान को मंजूर होता है, वही हो जाता है। मैं उनके परिवार के प्रति भी अपनी सहानुभूति प्रकट करता हूं। अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा कादमा इंसीडैन्ट में जो लोग फायरिंग से मारे गए हैं, अगर मुख्य मंत्री जी ठीक समझें तो उन लोगों के नाम भी इस शोक प्रस्ताव में जोड़ दें। वैसे इन्होंने उनको दो-दो लाख रुपये देकर इस बात को रिकोगनाइज तो कर लिया है लेकिन फिर भी अगर आप चाहें तो उनके नाम भी इस शोक प्रस्ताव में शामिल कर सकते हैं। इन शब्दों के साथ में इस शोक प्रस्ताव का समर्थन करता हुआ अपना स्थान लेता हूं।

प्रो0 रामविलास शर्मा (महेन्द्रगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आज जो सदन के नेता ने शोक प्रस्ताव रखा है, मैं उसका समर्थन करता हूं। हयात आती है और कजा लेकर चली जाती है पर आदमी अपनी इच्छा छोड़कर चला जाता है। अध्यक्ष महोदय, कुछ दिन पहले इसी छत के नीचे सरदार बेअंत सिंह जी पंजाब के मुख्य मंत्री थे और सबसे सुरक्षित जगह पर उनकी शहादत हुई। मैं उनके दाह संस्कार में शामिल हुआ था। सर, चण्डीगढ़ में कई लोगों के दाह संस्कार में शामिल होने का अवसर मुझे मिला परन्तु चण्डीगढ़ जैसा पत्थर दिल शहर जिसको मैं ने कभी भी किसी की मौत पर आंख से आंसू बहाते हुए नहीं देखा, यह शहर सरदार बेअंत सिंह जी की अर्थी पर जब वह चण्डीगढ़ के बाजारों से होकर जा रही थी, उसमें कोई नर-नारी ऐसा नहीं था जिसकी आंखों में आंसू न हों। उन लोगों में से किसी की आंख में तो श्रद्धा का आंसू था, किसी की आंख में असुरक्षा का भय था और किसी की आंख में आने वाली कोई दुर्घटना की आशंका थी। अध्यक्ष महोदय, राजनीतिक तौर पर सरदार बेअंत सिंह जी के और हमारे मतभेद रहे, हरियाणा के मुद्दों पर उनकी कुछ बातों से हमारे मतभेद बराबर बने रहे परन्तु वे एक फुटबाल के खिलाड़ी थे, एक सैनिक थे और आतंकवाद के खिलाफ देश द्रोह के खिलाफ जिस तरह से, जिस हौसले से और जिस आत्मविश्वास से पंजाब की धरती पर वे लड़े एवं जिस तरह से उन्होंने शहादत पायी, वह अपने आप में एक मिसाल है। उनकी शहादत से हमारी सारी सुरक्षा की पोल खुल गयी और उनके निधन से सारे उत्तरी भारत में एक सन्नाटा सा छा गया। आम आदमी के मन में उनकी शहादत से चहल पहल अस्त सी हो गयी। मैं इस शहादत के प्रति अपना नमन करता हूं और भारत के लोगों में जो एक आशंका और चिन्ता है, उसमें मैं शामिल होता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इसी तरह से राजनीति में एक बहुत ही ऊंची हस्ती श्री भोरार जी देसाई थे। हमारा 1977 में उनके साथ बहुत सक्रिय सम्बन्ध रहा। वे हरियाणा की तिहाड़ जेल में भी रहे। उन्होंने राजनीति में जो भी मुख से बोला, उसका मन से भी आचरण किया। अध्यक्ष महोदय, ऐसे बहुत कम लोग राजनीति में होते हैं। उन्होंने

भारतीय राजनीति में भारतीय संस्कृति की एक अनूठी छाप छोड़ी । सर, वे सौ वर्षों तक जिए परन्तु इन सौ वर्षों में उन्होंने अपने जीवन में कभी भी अपनी मान्यताएं नहीं बदलीं और सात्विकता का रास्ता नहीं छोड़ा । यह कहा जाता है कि पोलिटिकल आदमी की प्राईवेट लाइफ अलग हो सकती है लेकिन मोरार जी देसाई इस सम्बन्ध के प्रतीक थे । वे कहा करते थे कि प्राइवेट लाइफ कुछ नहीं होती, पब्लिक लाइफ कुछ नहीं होती । एक आदमी की एक ही लाइफ होती है । अध्यक्ष महोदय, उनकी समय की पाबन्दी की क्या मिसाल दूं । एक बार उन्होंने हरियाणा में एक जनसभा को सम्बोधित करना था । हमने कहा कि अभी भीड़ नहीं हुई है । उन्होंने पूछा कि मीटिंग का टाइम क्या रखा है । हमने कहा कि 8 बजे का टाइम रखा है । उन्होंने कहा कि 7 बजकर 59 मिनट पर मैं मंच पर होऊंगा, चाहे वहां पर कोई आदमी हो या न हो । अध्यक्ष महोदय, राजनीति में सामने कुछ और पीछे कुछ वाली बात होती है । जब वे प्रधान मंत्री थे तो पंजाब के अकाली मंत्री उनसे मिलने गए । मुझे किसी अवसर पर वहां जाना पड़ गया । उस समय बादल साहब मुख्य मंत्री थे । उन्होंने बातचीत शुरु करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री जी, पंजाब के साथ बड़ी ज्यादती हो रही है । देसाई जी ने कहा कि बातचीत की शुरुआत अगर आप ऐसे करते हैं तो मैं बातचीत नहीं कर सकता । वही बात वे उनके पीछे से मेरे साथ करते रहे । उनके निधन से भारत की राजनीति में बहुत भारी खलल हुई है । इसी तरह से, चमन लाल जी मेरी पार्टी के एम0एल0ए0 थे और कैथल के रहने वाले थे । हरियाणा में राजनीतिक लोगों द्वारा जिस तरह का व्यवहार विरोधियों के साथ होता है उसके बारे में तो आप स्पीकर सर, जानते ही हैं । चमन लाल जी आपके पड़ौस के थे । उनके साथ पुलिस की कितनी ज्यादती हुई, उनको उल्टा लटकाया गया । अंत समय तक चमन लाल जी को इस बात का मलाल रहा । बाद में उनकी मेरठ में हत्या हो गई । उनके निधन से मेरी पार्टी को बड़ा गहरा धक्का लगा है । मुनी लाल हमारे रिवाड़ी के पास के गांव के थे । 1987 में बावल विधान सभा क्षेत्र से जनता पार्टी के टिकट पर चुनाव जीतकर आए थे । उनके असामयिक निधन पर मैं दुःख प्रकट करता हूं । श्री सुन्दर सिंह, श्री तिरंजन सिंह और श्री घासी राम जी के निधन पर मैं अपनी संवेदना प्रकट करता हूं ।

श्री प्रेम नारायण भाटिया भारत के पत्रकार जगत में एक अपनी ही तरह की मिसाल थे । पत्रकारिता के क्षेत्र में वे शालीनता के रास्ते पर चले । वे जो स्तम्भ लिखते रहे, हम उन्हें लगातार पढ़ते रहे । भारत की राजनीति पर, उत्तर भारत की राजनीति पर और विदेश नीति पर उनकी गहरी पकड़ थी । आलोचना भी मर्यादा और शालीनता से करते थे । वे ट्रिब्यून के प्रमुख सम्पादक रहे । उनके निधन से पत्रकार-जगत में बहुत खलल हो गई है, मैं उनके निधन पर शोक प्रकट करता हूं । इसी तरह से, श्री हरीश चन्द्र खन्ना हरियाणा बिजली बोर्ड के चेयरमैन रहे और भारत सरकार में एक जिम्मेवार पद पर रहे । उनके निधन से मुझे और मेरी पार्टी को बहुत दुःख है । इसी तरह से, श्री बलदेव सिंह, जी के निधन से मुझे बहुत दुःख है । श्री विद्या सागर जी मेरे मित्र थे, पत्रकार खासकर चण्डीगढ़ में जो लोग पत्रकारिता करते हैं, उनमें उनका बड़ा

[प्रो0 राम विलास शर्मा]

स्थान था। उनके निधन से मुझे बड़ा दुःख है। बीड़ और रेल दुर्घटना में जो लोग मारे गए हैं, उनके निधन से मुझे बड़ा दुःख है। रेल दुर्घटना में हरियाणा के होनहार खिलाड़ी भी मारे गए जिनमें से बापोड़ा के श्री नरिन्द्र सिंह थे। देवसर गांव का राम शरण और लोहारू टाउन के दो नौजवान कोई लगभग 18-19 साल के होंगे, ये सब एशिया स्तर के खिलाड़ी थे और हरियाणा के थे। प्रोफेसर सम्पत सिंह जी ने बिल्कुल सही कहा है कि जिस गेम के वे खिलाड़ी थे, बड़े अच्छे एथलीट्स थे, उनके नाम से कोई न कोई स्टेडियम बनाया जाए और उन्हीं के खेल के आईटम के नाम पर टूरनामेन्ट्स व कोचिंग शुरू की जाए, तभी उनके लिये हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

चौधरी बंसी लाल जी का सुझाव भी बड़ा सराहनीय था कि कादमा में पुलिस की गोली से जो 6 लोग मारे गये हैं, जैसे मेवा सिंह, डगरौली का हवा सिंह और दीप चन्द वगैरह, इन सभी का नाम भी इस शोक प्रस्ताव में शामिल किया जाए। इन शब्दों के साथ मैं इन सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और सदन के नेता ने जो यह शोक प्रस्ताव रखा है, इसका समर्थन करता हूं। जय हिन्द।

मुख्य मंत्री (चौधरी भजन लाल) : अध्यक्ष महोदय, इस शोक प्रस्ताव में श्री एस0डी0वजाज (रिटायर्ड) जो पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के न्यायाधीश थे, जिसका पांच दिन पहले निधन हो गया है, वे दूसरा नाम श्री बी0एल0मित्तल, जो रिटायर्ड आई0ए0एस0 अधिकारी थे, उन्होंने इस प्रदेश की बहुत सेवा की है और चण्डीगढ़ के अन्दर वे होम सैक्रेटरी के पद पर रहे हैं, का भी पिछले दिनों निधन हो गया है, ये दोनों नाम भी इस शोक प्रस्ताव में शामिल कर लिये जाएं। इस के अतिरिक्त गांव कादमा जिला भिवानी के इन्सिडेंस में जो व्यक्ति मारे गये हैं, उनके नाम भी इस प्रस्ताव में शामिल कर लिये जायें।

चौधरी बीरेन्द्र सिंह (उचाना कलां) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता ने जो यह शोक प्रस्ताव इस सदन में रखा है, मैं भी अपने आपको उसमें शामिल करता हूं। जो दिवंगत आत्माएं आज हमारे बीच में नहीं रही हैं। उन्होंने किसी न किसी रूप में देश की, प्रदेश की सेवा की है और यह सदन इसीलिये आज इन दिवंगत आत्माओं का कृतज्ञ है। उन आत्माओं को आज यह सदन अपने श्रद्धा के सुमन अर्पित करता है।

सरदार बेअंत सिंह जी की जिस तरह से निर्मम हत्या हुई है, उससे आज सारा देश व समाज चिन्ता में डूब गया है और भयभीत है कि कहीं इसकी पुनरावृति फिर न हो जाए। यह चिन्ता आज उस देश के हिस्से की है जहां पहले आतंकवाद की घटनाएं होती रही हैं। प्रजातन्त्र की बहाली जिस प्रकार से पिछले साढ़े तीन-चार सालों में पंजाब में हुई है, इसका सारा श्रेय सरदार बेअंत सिंह जी को ही जाता है। इनके साथ साथ अगर पंजाब में शान्ति स्थापित करने का सबसे बड़ा प्रयास अगर किसी ने किया है तो वह पंजाब की जनता ने किया है और यह तभी हुआ जब पंजाब की जनता इस बात के लिये

दृढ़ संकल्प हुई कि पंजाब से आतंकवाद खत्म हो। लेकिन इस को खत्म करने की प्रक्रिया तब शुरु हुई जब प्रशासन, पुलिस और जनता की भावनाओं को, मुख्यमंत्री श्री बेअंत सिंह जी ने बैलेन्स किया। यह उनकी अपनी सूझबूझ का ही परिणाम था जिस के कारण पंजाब के अन्दर पूर्णतः शान्ति स्थापित करने में उनकी अहम भूमिका रही है। उन्होंने यह साबित कर दिया कि किसी भी कठिन से कठिन काम को या किसी भी संवेदनशील विषय पर अपनी पकड़ मजबूत करनी हो तो विवेक को प्राथमिकता देनी चाहिये। उन्होंने अपने विवेक से ही पंजाब की जटिल समस्या का समाधान किया। उन्होंने पंजाब पुलिस को, पैरा मिल्ट्री फोसिज को और पंजाब के प्रशासन को ऐसे काम में लगाया जिससे वहां का वातावरण सुखद हो रहा था। लेकिन फिर भी कुछ घटनाएं ऐसी घटीं जिन से आम जनता को तकलीफ हुई और उस तकलीफ को दूर करने में बड़ी दूरदर्शिता से काम लिया। मैं समझता हूं कि उनके निधन के बाद आम लोगों को यह शंका पैदा हो गई कि कहीं यह आतंकवाद की पुनरावृति तो नहीं ? लेकिन इस देश का यह हिस्सा आज यह कह सकता है कि आज यहां पूर्ण शान्ति है और शायद ऐसा कभी न हो। लेकिन कुछ लोगों के दिल में यह बात आई कि उनकी हत्या आतंकवाद के कारण हुई या उन ताकतों की वजह से हुई जो बाहरी ताकतें इस देश को डी-स्टैबालाइज करने के लिये और इसकी शान्ति भंग करने के लिये काम कर रही हैं। सरदार बेअंत सिंह उस डी-स्टैबलाइजेशन का एक निशाना थे। मैं दिवंगत आत्मा के परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उस महान शहीद की आत्मा को शान्ति दे। इसके साथ साथ श्री मोरार जी देसाई अपने आप में एक इंस्टीच्यूशन थे। उन्होंने राजनैतिक परम्पराओं को निभाया। उन्होंने नैतिक मूल्यों को राजनीति में संजो कर रखा और उन पर आचरण किया। हम कह सकते हैं कि उन्होंने अपनी सोच और राजनैतिक सोच में अन्तर नहीं आने दिया। उस समय भी लोगों ने राजनीति का अपराधीकरण और व्यापारीकरण करने की कोशिश की लेकिन मोरार जी ने उनको ऐसा करने का मौका नहीं दिया। इस तरह वे एक इंस्टीच्यूशन बन कर रहे। राजनीति से ऐसे महापुरुष का चले जाना, देश की राजनीति से ऐसे स्तम्भ का जो हमेशा प्रेरणा का स्रोत रहा हो और विश्वास पैदा करने का स्रोत रहा हो, उठ जाने का हमें बड़ा अफसोस है। वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। उनके जाने से हमें बहुत दुःख हुआ है और धक्का लगा है। मैं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। इसके साथ साथ और भी पंजाब और हरियाणा के विधायक हमारे बीच में से चले गए हैं। जैसे श्री चमन लाल और मुन्नी लाल जी हमारे मित्र थे। श्री मुन्नी लाल जी बहुत ही सहज स्वभाव के थे। उनकी राजनीति में गहरी रुचि थी तथा वे एक सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। इसी तरह से चौधरी सुन्दर सिंह जी भी बड़े लम्बे समय तक पंजाब में मन्त्री रहे। स्पीकर साहब, आपको मालूम ही है कि किस प्रकार से वे लोक सभा में गरीबों और शिड्यूल्ड कास्टस के लिये वकालत किया करते थे, उनकी आत्मा से बोलते थे। वे दिल की गहराई से बोलते थे। इसके इलावा जब वे संसद सदस्यों में बैठते थे, उस समय जो मनोरंजन करते थे वह भी देखने को बनता था। मेरा भी उनसे सम्पर्क रहा है। उनके

[चौधरी बीरेन्द्र सिंह]

चले जाने से हमें बहुत दुःख है ।

इसी तरह से श्री निरंजन दास धीमान संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य के निधन से हमें बहुत दुःख है । श्री घासी राम, संयुक्त पंजाब विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य मेरे अपने जिले से थे । पैप्सू के समय में जब 1954 में मध्यावधि चुनाव हुए थे, उस समय वे विधायक बने थे । उसके बाद जब पैप्सू और पंजाब का मरजर हुआ तो वे पंजाब असैम्बली के सदस्य रहे । उनके निधन से हमें बड़ा भारी दुःख है । श्री प्रेम नारायण भाटिया, ट्रिब्यून समाचार पत्र समूह के पूर्व प्रधान सम्पादक और श्री विद्यासागर, जनसत्ता के प्रमुख संवाददाता एवं वरिष्ठ पत्रकार थे । ये दोनों पत्रकारिता जगत के बड़े स्तम्भ थे । श्री भाटिया के बारे में तो मैं यह कह सकता हूं कि उन्होंने बड़ी दिलेरी के साथ इन्टरनैशनल अफेयर्ज से संबंधित लेख लिखे । उनके फारेन अफेयर्ज आर्टिकल्ज बड़े नपे तुले होते थे । पाकिस्तान और भारत के संबंधों के बारे में वे लेख लिखते थे और अपनी लेखनी से एक खाका खींच कर रखते थे कि आने वाले समय में भारत की क्या क्या प्रायरिटीज होनी चाहिए, क्या परम्पराएं होनी चाहिए और इस समय में जो आज चिन्ता की स्थिति है, उसको कैसे उखाड़ करके अच्छा वातावरण पैदा कर सकते हैं । ऐसे पत्रकार के जाने से पत्रकारिता जगत को बड़ा धक्का लगा है । इसी तरह से श्री विद्यासागर के साथ मेरा 12-13 साल तक सम्पर्क रहा । उनका जीने और रहने का एक ही स्टाइल था, उसमें मुझे कभी कोई फर्क नजर नहीं आया । वे बड़े निर्भीक पत्रकार थे । मैं उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं ।

इसी तरह से अध्यक्ष महोदय, बम विस्फोट से अपनी ड्यूटी करते हुए जो कर्मचारी मारे गए हैं उनके बारे में मैं यह कह सकता हूं कि उनकी शहीदी भी किसी और की शहीदी से कम नहीं है । बेशक वे कर्मचारी छोटे दर्जे के थे, चाहे वे पुलिस के कर्मचारी थे, चाहे पैरा मिलिटरी फोर्सिज के थे, उन्होंने अपनी ड्यूटी निभाई है । देश के वीरों की जो परम्परा है उसको देखते हुए हम उनके सामने नतमस्तक होते हैं । श्री हरीश चन्द्र खन्ना, दूरदर्शन के भूतपूर्व महानिदेशक के चले जाने से हमें बड़ा दुःख है । वे जब बिजली बोर्ड के चेयरमैन थे, उस समय हमारा उनसे सम्पर्क हुआ था । वे बहुत ही बेहतरीन किस्म के आदमी थे । उनके काम करने का तरीका भी एक परम्परागत तरीका था और वह सिविल सर्विसिज से हट कर था । वे बड़े मिलनसार इन्सान थे ।

इसके अलावा स्पीकर साहब, जो दुर्घटनाएं हुई चाहे वे बाढ़ के कारण हुई, चाहे तूफान के कारण हुई इनमें हरियाणा के सैकड़ों लोगों की जानें गई । रेल दुर्घटना हुई वह बहुत भयानक दुर्घटना थी । उस रेल में जो लोग बैठे थे वे देश का भविष्य थे । उस दुर्घटना में पंजाब और हरियाणा प्रदेश के 12 खिलाड़ी शिकार हुए । उन सभी खिलाड़ियों के परिवारों के प्रति मैं अपनी संवेदना प्रकट करता हूं । ऐसे

होनहार खिलाड़ियों के ससार से चले जाने पर हमें तो दुःख है ही, उनके परिवारों को भी बड़ा भारी सदमा पहुंचा है । ऐसे वक्त में सरकार का यह कर्तव्य बनता है कि इस दुखदायी घड़ी में सरकार उनको जो सहायता उपलब्ध करा सकती है, वह कराए । इसके अलावा, अध्यक्ष महोदय, जो लोग बाढ़ में या तूफान में मारे गए हैं उनके परिवारों के प्रति भी हमारी बहुत सहानुभूति है । उनके परिवारों को हम अपनी संवेदना देते हैं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि जो ये लोग संसार से चले गए हैं, परमात्मा उन सब लोगों को अपने चरणों में स्थान दे और उनकी आत्मा को शांति दे ।

प्रो० राम बिलास शर्मा : अध्यक्ष महोदय, कुरुक्षेत्र जिले से एक बस नेपाल (काठमांडू) गई थी पता चला है कि वह बस किसी खड्डे में गिर गयी, आज तक वापस नहीं आई । इस घटना में कम से कम 50 लोग मारे गए । मैं चाहता हूं कि उनका नाम भी इन शोक प्रस्तावों में शामिल कर लिया जाये ।

चौधरी भजन लाल : अध्यक्ष महोदय, इनको भी इन शोक प्रस्तावों की सूची में शामिल कर लिया जाये ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, हरियाणा के पिछले सत्र से लेकर इस सत्र के बीच के समय में बहुत सी महान विभूतियां इस संसार से, हमारे बीच से चली गई हैं । हमारी राजनीतिक पार्टियों के सभी सदस्यों ने जो हार्दिक संवेदना इन महान विभूतियों के प्रति प्रकट की है, उनमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं ।

सरदार बेअंत सिंह जो सैल्फ मेड व्यक्ति थे, वे गांव के सरपंच से लेकर पंजाब के चीफ मिनिस्टर तक के ओहदे पर रहे । वे देश के लिए और सैकुलेरिज्म के लिए शहीद हुए । उन्होंने पंजाब में जहां हालात बिगड़े हुए थे, शांति स्थापित की जो अपने आप में बड़ी भारी चीज है । एक सूबे का असर दूसरे सूबे पर यानी सारे देश पर पड़ता है और सारे देश का असर सारी दुनिया पर पड़ता है । अतः उनके चले जाने का मुझे बेहद दुःख है ।

इसी प्रकार से श्री मोरारजी देसाई प्रधान मन्त्री रहे हैं । वे गुजरात के पी०सी०एस० अधिकारी थे । उन्होंने महात्मा गांधी के आह्वाहन पर नौकरी छोड़ दी थी और देश की स्वतन्त्रता के लिए काम करने हेतु कूद पड़े ।

उन्होंने अनेक जन आन्दोलनों में भाग लिया था । वे महाराष्ट्र और गुजरात में अलग-अलग ओहदों पर रहे । वे वहां पर एम०एल०ए० और मन्त्री भी रहे । केन्द्र में भी कामर्स, इण्डस्ट्रीज और कई बार फाइनैंस मिनिस्टर रहे । वे कामराज प्लान के तहत उप प्रधानमन्त्री भी रहे । उन्होंने इस्तीफा भी दिया और आखिर में देश के प्रधान मन्त्री भी बने । वे अपने असूलों के पक्के थे । उन्होंने नौजवानों को शिक्षा दी कि वे देश की सेवा सच्चाई और ईमानदारी से करें, यही सबसे बड़ा उन का कर्तव्य

[श्री अध्यक्ष]

हैं। ऐसे व्यक्ति का हमारे बीच से चले जाने का वाकई दुःख है। उनको देश के सम्मान के रूप में भारत रत्न की उपाधि भी दी गई। अतः मैं उनके परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं।

श्री चमन लाल जो हमारे कैथल जिले के रहने वाले थे। उनके चले जाने का भी हम सभी को दुःख है। श्री मुर्नी लाल जी भी बावल से विधायक थे। वे 1987 में इसी सैशन के सदस्य रहे हैं। श्री सुन्दर सिंह भी पंजाब में एम०एल०ए० रहे। वे एक बार नहीं पांच बार वहां पर एम०एल०ए० रहे और पार्लियामैंट के मैम्बर रहे। निरंजन दास धीमान भी 1952 से 1957 तक पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे। उनके निधन का भी मुझे दुःख है। घासी राम जी भी पैप्सू में और पंजाब में एम०एल०ए० रहे। उनके निधन का भी हमें दुःख है।

श्री प्रेम नारायण बहुत ही अच्छे एडिटर थे उनका भी निधन हो गया है। श्री प्रेम नारायण जी का इण्डियन एक्सप्रैस, हिन्दुस्तान टाईम्ज और ट्रिब्यून के साथ संबंध रहा तथा वे हमारे हाई कमिश्नर भी रहे। उनको "गोयन्का अवार्ड" से भी सम्मानित किया गया था। उनके निधन का हम सब को बहुत ही दुःख है। श्री हरीश चन्द्र खन्ना आई०ए०एस० आफिसर थे तथा बिजली बोर्ड के चेयरमैन भी रहे। उन्होंने बहुत ही सराहनीय काम किया। उनका भी निधन हो गया। इसी तरह से जस्टिस श्री एस०डी० बजाज और आई०ए०एस० आफिसर श्री बी०एल० सिंगल का भी निधन हो गया है, इसके साथ ही रेल दुर्घटना में तथा फ्लड के कारण काफी लोगों की जानें गई हैं जिस पर हम सभी को बहुत भारी दुःख है। रेल दुर्घटना में पंजाब, हरियाणा तथा देश के और हिस्सों के लोगों के साथ साथ हमारे खिलाड़ी भी मारे गए हैं। कादमा फायरिंग में जाने-अनजाने में जिन व्यक्तियों की डैथ हो गई है, उन सभी के साथ इस सदन की पूरी सहानुभूति है।

I would request the Hon'ble Members to observe two minutes silence. (At this stage the House stood in silence as a mark of respect to the departed souls).

I will convey the feelings of this House to the members of the bereaved families

बैठक का स्थगन

15.00 बजे | मुख्य मंत्री (चौधरी भजन लाल) : अध्यक्ष महोदय, मैं गुजारिश करूंगा कि आज की आगे की और कार्यवाही न करके अब हाउस को एडजर्न कर दिया जाए।

सरदार बेअन्त सिंह जी के स्वर्गवास की घटना पर देश के सभी हिस्सों से लोगों दुःख प्रकट किया है तथा इस घटना पर इस सदन में माननीय सभी सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं । एक ही बिल्डिंग में हरियाणा तथा पंजाब विधान सभा सचिवालय हैं, एक ही बिल्डिंग में हरियाणा तथा पंजाब के मुख्य मन्त्री बैठते हैं, इसलिए सरदार बेअन्त सिंह के निधन से सारे देश को दुःख हुआ है, खासकर हरियाणा को बहुत ही दुःख हुआ है । अध्यक्ष महोदय, मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हाउस को ऐडजर्न कर दिया जाए ।

Mr. Speaker : Now the House is adjourned till 2.00 p.m. on Tuesday, the 26th September, 1995.

15.04 P.M. | (The Sabha then *adjourned till 2.00 p.m. on Tuesday, the 26th September, 1995).

27084—H.V.S.—H.G.P., Chd.